अश्वगंधा की वैज्ञानिक खेती

चम्पा लाल खटीक[1], नगेन्द्र कुमार पाडिवाल[2], नटवर सिंह डोडिया[3] एवं अरूणाभ जोशी[4]

1. परिचय
2. उपयोगिता एव महत्व
3. वानस्पतिक वर्गीकरण
4. उत्पति एवं वितरण
5. राष्ट्रीय उत्पादन दृश्य
6. पौध विवरण
7 अश्वगंधा की खेती करने की विधियां

1.परिचय

अश्वगंधा ''इंडियन जिनसेन या जहरीला करोंदा''। प्वॉइजन गुजबेरी या विंटर चैरी और भारत के उत्तर पश्चिमी और मध्य हिस्से में उपजने वाली देशी दवाई के तौर पर भी जाना जाता है। अश्वगंधा का भारतीय जिनसेंग भी कहा जाता हैं। चीन में जिनसेंग का इस्तेमाल यौन क्षमता वृद्वि के लिए किया जाता है। यह एक औषधीय उपयोग का पौधा है। यह अश्वगंधा बल्य (टॉनिक) है यह कार्यक्षमता व शारीरिक क्षमता बढ़ाता है व पोषण प्रदान करता है। चुस्ती–स्फूर्ति प्रदान करता हैं आयुर्वेद में अश्वंगधा को रसायन माना जाता है, जिसका उपयोग शारीरिक क्षमता और आरोग्य वृद्धि में किया जाता है। अश्वगंधा का अर्थ अश्व (घोड़े) का गंध वाला होता है। इसका यह नाम शायद इसलिए है कि इसकी जड़ की गंध घोड़े के मूत्र की गंध जैसी होती है। अश्वगंधा के सामान्य नाम असंगध, नागौर असंगध, पुनीर, विंटर चेरी, प्वॉइजन गुडबेरी और इंडियन जिनसेंग, अश्वगंध, हिंदी में रसभरी, अमुक्का, असुरागन्धी (तमिल) अमुक्कुरम, त्रितावु, अयामोदकम (मलयालम), घुप्पा (बंगाली), केरामाद्दीनागड्डी, कंचुकी (कन्नड़), आस्कनंदा, डोर गुंज, घोड़ा, तिल्ली (मराठी) असोद, घोड़ा अदान, घोड़ा अकान, असुन, घोड़ा सोड़ा (गुजराती), पेन्मेरू, वाजीगंधा, अहान (तेलगु) आदि नाम से जाना जाता है।

2. उपयोगिता एव महत्व

अश्वगंधा एक महत्वपूर्ण औषधीय फसल है। इसकी जड़ों में 13 प्रकार के एल्कालायड पाये जाते है जिनकी मात्रा 0.13 से 0.51 प्रतिशत तक होती है। जड़ों में प्रमुख अल्कलायक निकोटीन, सोमनीफेरीन, विथेनीन, विथेनेनीन, सोमिनीन, कोलीन, विथेफेरिन, एनाफेरीन, एनाहाइग्रीन, कस्कोहाइग्रीन, स्कोपोलेटिन, सोमिनीफेरीनीन, सोमनीफेरीनोन आदि पाये जाते है। इसकी पत्तियों में विथेनीन, विथेफेटिन ए (स्टेराराइडल लेक्टिन), एनाफेरीन, एनाहाइग्रीन, सिस्टरॉल, क्लोरोजेनिक एसीड बीटा सिस्टेटॉल, क्रोजेनिक एसीड आदि अश्वंगधा के मुख्य अव्यव एल्केलाइडस और स्टेरॉइडल लेक्टॉन है। इनके अतिरिक्त इसमें ग्लाइकोसाइड, विटानिआल, स्टार्च, शर्करा, व अमीनो अम्ल भी पाये जाते है। इसका प्रयोग विभिन्न आयुर्वेदिक, होम्योपेथिक व यूनानी दवाईयां बनाने में होता है, जो विभिन्न बीमारियों जैसे हड्डियों व जोड़ों के रोग, आँखों के रोग आदि के निदान में काम आती है। जड़ों का उपयोग गठिया,

1 -4 अखिल भारतीय औषधीय एवं सुगंधित पौध अनुसंधान परियोजना, महाराणा प्रताप कृषि एंव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर (राजस्थान)।

अपच, त्वचा रोग, ब्रोकाइटिस, अल्सर और यौन दुर्बलता के इलाज में किया जाता है। सर्पदंष में भी जड़ों का उपयोग किया जाता है। बुखार के लिए पत्तियों का अर्क दिया जाता है। बवासीर के उपचार के लिए पत्तियों का काढ़ा आंतरिक और बाहरी रूप से उपयोग किया जाता है। पत्तियों का उपयोग आँख, फोड़े, हाथ और पैर की सूजन के लिए किया जाता है। छाल का काढ़ा अस्थमा रोग में दिया जाता है। शरीर के जूँ मारने के लिए कीटनाशक के रूप में उपयोगी होता है। स्त्रियों के बाँझपन को दूर करने के लिए इसके काढ़े को दूध के साथ दिया जाता है। इसका प्रयोग पुरूषों के काम शक्तिवर्धक के रूप में भी होता है। अश्वगंधा की पत्तियों का भी औषधीय महत्व है।

3. वानस्पतिक वर्गीकरण

1. श्रेणी : औषधीय समूह
2. वनस्पति का प्रकार : शाखीय
3. वैज्ञानिक नाम : विथानिया सोमनीफेरा
4. सामान्य नाम : अश्वगंधा
5. कुल : सोलोनेऐसी
6. आर्डर : सोलानालेस
7. प्रजातियाँ : डब्ल्यू. सोमनीफेरा, डब्ल्यू. कांगुलस

4. उत्पति एवं वितरण

अश्वगंधा की बीस से ज्यादा प्रजातियाँ, भारत, उत्तरी अफ्रीका, मध्यपूर्व और भूमध्यसागरीय क्षेत्र के सूखे वाले भागों में पाई जाती है। यह मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ के जंगलों में पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, कर्नाटक और हिमालय में पाया जाता है। अश्वगंधा भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश में उगाए जाते है। भारत में वर्तमान में इसकी मुख्य रूप से पश्चिमी मध्यप्रदेश में मंदसौर, नीमच, मनास्प, जावद, भानपुरा तहसील में तथा पूर्वी राजस्थान में कोटा, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ तथा नागौर जिले में लगभग 8000 हैक्टेयर क्षेत्र में हो रही है। इस फसल के मुख्य उत्पादक राज्य मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र पंजाब, राजस्थान और उत्तरप्रदेश है। मध्यप्रदेश में इसकी व्यवसायिक खेती होती है।

अश्वगंध भारत की एक महत्वपूर्ण खेती की जानी वाली औषधीय फसल है। इसे हिन्दी में असगंध भी कहा जाता है। इसे अंग्रेजी में विन्टर चेरी के नाम से जाना जाता है। प्राचीन आयुर्वेदिक साहित्य में इसका एक महत्वपूर्ण दवा के रूप में उल्लेख किया गया है।

5. राष्ट्रीय उत्पादन दृश्य

इस समय भारत में इसकी खेती 8000 हेक्टेयर में की जाती हैं जिसमें कुल उत्पादन 3200 टन प्रति वर्ष होता है। जबकि इसकी मांग 7000 टन प्रति वर्ष है। अश्वगंधा के बाजार के लिए मध्यप्रदेश का नीमच और मंदसौर पूरी दुनिया में मशहूर है। देश से आयातक, खरीददार, प्रोसेसर, पारंपरिक व्यापारी, आयुर्वेदिक और सिद्वाड्रग मेन्यूफ्रेक्चरर प्रति वर्ष यहां आकर अश्वगंधा की जड़े खरीद कर जाते है। बड़े पैमाने पर उत्पादन करने से पहले, बाजार को खोजना और इसकी स्थापना करना है। हर्बल, आयुर्वेदिक कंपनियों से संपर्क बेहतर विकल्प है। यहां सूखी जड़े 90 से 200 रूपये प्रति किलोग्राम बेची जाती है।

भारत में इसका वार्षिक उत्पादन लगभग 3200 टन है, जिसका बाजार मूल्य 160 करोड़ रूपये है। वर्तमान में जब पारम्परिक फसलों से शुद्ध लाभ में लगातार कमी आ रही है, तब इस फसल की

खेती से अधिक शुद्व लाभ प्राप्त किया जा सकता है। अतः विविधीकरण के लिए यह एक उपयुक्त फसल है।

6. पौध विवरण

यह एक काष्ठीय झाड़ी है। यह मध्यम लम्बाई (40 सेमी. से 150 सेमी.) वाला बहुवर्षीय पौधा है। शाखाऐं टेढ़ी–मेढ़ी एवं रोमयुक्त होती है। इसका तना शाखाओं युक्त, सीधा, धूसर या श्वेत रोमिल होता है। इसकी जड़ लम्बी व अण्डाकार होती है। पुष्प छोटे हरे या पीले रंग के होते है तथा फल 6 मिमी. चौड़े गोलाकार, चिकने व लाल व पीले रंग के होते है। फलों के अन्दर काफी संख्या में बीज होते है। यह टमाटर की तरह होता है, जो उसी के परिवार का सदस्य है। पुष्प एक साथ गुच्छों में आते है। इसके फल मटर के आकार में बेरी की तरह होते है। आयुर्वेद में अश्वंगधा की पत्तियां हल्की हरी, अंडाकार सामान्य तौर पर 10 से 12 सेमी लंबी होती। इसके फूल छोटे, हरे और घंट के आकार के होते है।

इसके पत्ते बैंगन के पत्तों के समान होते है। इसकी जड़ मूसलदार होती है। पौधे की ऊँचाई लगभग 1.5 फीट, शाखाऐं टेढ़ी–मेढ़ी एवं रोमयुक्त होती है। पुष्प एक साथ गुच्छों में आते है। फल मटर के आकार के होते है और पकने पर हल्के पीले या लाल रंग के हो जाते है। बीज मोटे व चपटे आकार के होते है।

स्वरूप : यह एक सीधा, रोयेंदार और सदाबहार पौधा है। पौधे के सभी भाग श्वेताभ होते है।

पत्तियाँ : पत्तियाँ अण्डाकार, पूर्ण और पतली होती है।

फूल : फूल उभयलिंगी और हरे या अंधकारमय पीलेरंग के होते है। फूल जुलाई से सितम्बर माह में आते है।

फल : फल बेरी के रूप में 7 मिमी के लाल, गोलाकार और चिकने होते है। फल पकने पर नारंगी लाल रंग के हो जाते है। फल दिसम्बर माह में आते है।

बीज : इसके बीज पीले रंग के होते है।

परिपक्व ऊँचाई : यह पौधा लगभग 25–30 सेमी तक की ऊँचाई तक बढ़ता है।

7 अश्वगंधा की खेती करने की विधियां :

- भूमि – चिकनी, बलुई दोमट मिट्टी या काली दोमट भूमि अथवा हल्की लाल मिट्टी जिसका पी.एच. मान 7.0 से 8.0 हो तथा उचित गहराई व जलधारण शक्ति अधिक हो एवं भूमि में जल का निकास अच्छा हो इसकी खेती के लिए उपयुक्त रहती है। भारी भूमि में भी इसकी खेती की जा सकती है परन्तु खेत में पानी भरा नहीं रहना चाहिए तथा जल का भराव होने से जड़ों की गुणवत्ता पर विपरित प्रभाव पड़ता है।
- जलवायु – अश्वगंधा एक देरी से बोई जाने वाली खरीफ की फसल है। इसकी खेती के लिये ऐसे क्षेत्र जहाँ वार्षिक वर्षा 500 से 800 मि.मी. हो वह स्थान फसल के लिये उपयुक्त होते है तथा यह एक समशीतोष्ण जलवायु की फसल है। अतः इसके लिये आर्द्र–शुष्क जलवायु ही उत्तम रहती है। बीज पकने के समय कुछ गर्म तापमान की आवश्यकता रहती है। फूल तथा बीज बनते समय वातावरण में नमी हो तथा बादल होने पर फसल पर रोगों व कीटों का प्रकोप ज्यादा होता है।

- बुवाई का समय : बुवाई का उत्तम समय अगस्त का अन्तिम पखवाड़े से सितम्बर माह के प्रथम पखवाड़े तक की जा सकती है, जब तीन चौथाई वर्षा ऋतु गुजर चुकी होती है तथा भूमि जल से तृप्त हो जाती है। बुवाई के समय भूमि में पर्याप्त नमी आवश्यक है। बुवाई एक फीट दूर कतारों में करें तथा खेत से पानी के निकास का उचित प्रबंध आवश्यक है। बीज की बुवाई 2 सेमी से अधिक गहराई पर नहीं होनी चाहिए। बुवाई के 25 दिन बाद कतारों में पौधों की छटांई करके दूरी लगभग 5 से.मी. कर दें।
- खेत की तैयारी : गर्मियों में गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। मानसून की वर्षा शुरू होने पर दो या तीन जुताईयां करें व पाटा लगायें ताकि वर्षा के पानी को भूमि में संरक्षित किया जा सके।
- बीज की दर : एक हैक्टर क्षैत्र में 6–8 किलोग्राम बीज कतार में बुवाई के लिए तथा छिड़काव विधि के लिये 10–12 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। छिड़काव विधि के लिये बीजों को इसकी बीज दर से छह से आठ गुना बारीक छनी हुई मिट्टी के साथ मिलाकर बुवाई करनी चाहिए।
- बीजोपचार : बुवाई से पहले बीज को थायरम या डायथेन एम–45 नामक फफूंद नाशक 4 ग्राम दवा प्रति किलो बीज से उपचारित करें।
- समन्वित खाद व उर्वरक : फसल को ज्यादा उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती है। अश्वगंधा की फसल के लिए बुवाई के पूर्व 10 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या 1.5 टन वर्मी कम्पोस्ट,30 कि.ग्रा. नत्रजन, 30 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 20 कि.ग्रा. पोटैशियम तत्व की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता रहती है। सड़ी हुई गोबर की खाद अंतिम जुताई से पहले खेत में समान रूप से बिखरे देवे तथा उर्वरक की पूरी मात्रा बुवाई के समय बीज से 4 सेमी. नीचे नालियों में ऊर कर दें। नत्रजन उर्वरक का विभाजित प्रयोग इस फसल में लाभदायक नहीं पाया गया है।
- सिंचाई– बीजों का अंकुरण भूमि में उपस्थित नमी से हो जाता है तथा मानसून की ऋतु समाप्त होने से पहले ही पौधा भूमि में अच्छी तरह से स्थापित हो जाता है। इसके पश्चात् भूमि में संरक्षित नमी पर पौधे का निर्वाह हो जाता है। इसके लिए वर्षा के जल को भूमि में संरक्षित करने की क्रियाऐं जैसे मृदा आच्छादन आदि किये जाने चाहिये। इसके पश्चात् भी पौधों में अस्थाई मुरझाने के लक्षण दिखाई दें तो अंकुरण के 30–35 दिनों के बाद सिंचाई करना चाहिए। अगली सिंचाई 60–70 दिनों के बाद करनी चाहिए। अस्थाई मुरझाने के लक्षण दिखाई दे तो सिंचाई करें परन्तु ध्यान रहे कि जमीन में पानी का भराव अधिक देर तक नहीं हों अन्यथा इसकी गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। यदि वर्षा नियमित अंतराल से होती है तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं पडती है।
- खरपतवार प्रबंधन : बुवाई से पहले ग्लाइफोसेट 1.5 कि.ग्रा/हैक्टेयर की दर से खेत में डालकर खरतपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है। अथवा फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु आईसोप्रोट्यूरोन 0.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से अंकुरण पूर्व छिड़काव तथा बुवाई के 45 दिन पश्चात् एक बार निराई–गुड़ाई करने से खरतपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है तथा यदि आईसोप्रोट्यूरोन का प्रयोग अंकुरण पूर्व नहीं किया गया हो तो हाथ से दो निराई गुड़ाई प्रथम बुवाई के 30–35 दिन बाद व द्वितीय निराई गुड़ाई 50–60 दिन बाद करके खेत को खरपतवार मुक्त करना चाहिए।
- पादप वृद्धि नियंत्रण रसायन का छिड़काव– अश्वगंधा की फसल में आर्थिक लाभ जड़ से प्राप्त होता है। अतः पौधों में जड़ों की वृद्वि अधिक हो तथा भूमि से ऊपरी भाग की वृद्वि कम हो,

तथा शुष्क पदार्थ ज्यादा से ज्यादा मात्रा में जड़ों में एकत्र होने आवश्यक है। इसके लिये पौधों पर मेपीक्वेट क्लोराइड 1000 पी.पी.एम. के दो छिड़काव पौधों में फूल निकलने शुरू होने के समय तथा इसके 15 दिन बाद करना चाहिऐ जिससे जड़ों की उपज अधिक प्राप्त की जा सकती है।

- फसल सुरक्षा –

(अ) प्रमुख व्याधियाँ एवं रोकथाम :

- जड़ गलन रोग– इस रोग की रोकथाम हेतु बीज को बाविस्टीन 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करे। इसके बाद 20 प्रतिशत ट्राईकोडर्मा के घोल से उपचारित करें लेकिन यह ध्यान रखें की बाविस्टीन के उपचार के 1 दिन बाद ट्राइकोडर्मा से उपचारित करें।
- पर्ण धब्बा रोग (पर्ण अंगमारी)– इस रोग की रोकथाम के लिये बाविस्टीन का 0.01 प्रतिशत का छिड़काव फसल पर बुवाई के 35.55 एवं 75 दिनों के बाद करें। यह रोग पौधे की संख्या अत्यधिक कम कर देता है। अंततः उपज कम प्राप्त होती है। बुवाई से पूर्व बीजों को केप्टान 3 ग्राम/कि.ग्राम की दर से उपचारित करक ही बुवाई करें।

(ब) प्रमुख कीट एंव रोकथामः

- मोयला (एफिड्स) – सभी रस चूसक कीड़ों के लिए मिथाईल ओवसी–डिमेंटोन 25 ई.सी. (0.05 प्रतिशत) 2 मि.ली. अथवा डाईमिथेएट 30 ई. सी. व 1 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर फसल पर छिड़काव करें। जिससे इस कीट को नियंत्रित किया जा सकता है। जब फसल 30 दिनों तब डाइथेन एम–45 दवा 3 ग्राम 1 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यदि एक छिड़काव से नियंत्रण नहीं हो तो दूसरा छिड़काव 12 से 15 दिन पश्चात् करें।
- मत्कुण (माईट) : यह अश्वगंधा की पत्तियो की निचली सतह पर रस चूसते है जिससे पौधे की पत्तियॉ पीली पड़ कर सिकुड़ जाती है तथा पौधा मुरझाने लग जाता है तथा अंत में पकने से पहले ही पौधा सूख जाता है। इसके प्रबंधन हेतु फेनाजिनाक्वीन 10 ई.सी. 1 मि. ली. दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर अथवा हैक्सीथायजोक्स 5.45 ई.सी. 500 मि.ली. दवा का 500 लीटर पानी में प्रति हेक्टर की दर से घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 12–15 दिनों के अंतराल पर करें।
- हाड़ा–भृंग : अश्वगंधा की फसल में हाडा–भृंग प्रौढ व शिशु की संख्या का प्रकोप अक्टूबर से नवम्बर तक सबसे अधिक पाया जाता है। इसके प्रबंधन के लिये करंज का तेल 5 प्रतिशत सानुता का पौधों की पत्तियों पर छिड़काव करने पर 2 से 3 दिन तक रोका जा सकता है अथवा फसल पर मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर से पौधों पर भुरकाव करें। हाडा बीटल के शिशु व पौढ़ की 500 मिली. मेलाथियॉन 50 प्रतिशत ई.सी. या 2.5 कि.ग्रा. कार्बेरिल 50 प्रतिशत डब्ल्यु पी. 400–500 लीटर पानी में प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।

- विपणन – जड़ों को नीमच व मनासा (मध्यप्रदेश) तथा खारी बावली (दिल्ली), अमृतसर (पजाब), पचकूला (हरियाना) व सीतामटी (बिहार) की मंडियों में बेचा जा सकता है। बहुत सी फार्मा कमपनियों जैसे डाबर, बैधनाथ, झण्डू, हिमालयान ड्रग आदि भी इसकी नियमित खरीद करती है।

- उत्पादन क्षमता : 600 से 800 क्विंटल कि.ग्रा./हेक्टेयर सूखी जडे ।

8. **अश्वगंधा की जड़ों को उखाड़ना एवं श्रेणीकरण :** अश्वगंधा की फसल 160 से 180 दिन में पककर तैयार हो जाती है। फसल कटाई जनवरी से प्रारम्भ होती है जो मार्च तक चलती है। परिपक्व होने पर पत्तियाँ पीली पड़कर सूखने लगती है तथा फल (बेरी) के सूखने से परिपक्वता अनुमानित की जाती है जो कि हल्के भूरे–लाल रंग में परिवर्तित हो जाते है। ऐसी अवस्था में अगर सिंचाई उपलब्ध है तो एक सिंचाई करके पौधों को जड़ सहित उखाड़ देते है अथवा ट्रैक्टर से गहरी जुताई करके जड़ों को बाहर निकाल देते है। इसके तुरन्त बाद जड़ों को शीर्ष से 1–2 सेमी छोड़कर पौधे से काटकर अलग कर देते तथा उन्हें टुकड़ों में तोड़कर 10–15 दिन के लिये छाया में सुखाते है। जड़ों को सूखने के बाद इन्हें निम्नानुसार विभिन्न श्रेणियों में छाँट देते है तथा अलग–अलग बोरों में भरकर बाजार में बेचने के लिये भेज देते है। ऐसा करने से बाजार में मूल्य अधिक प्राप्त होता है। (श्रेणीकरण सारणी) श्रेणीकरण–छटाईं पूरे उत्पाद की सावधानीपूर्वक इनकी मोटाई और उनकी एकरूपता के आधार पर चार भागों में विभाजित किया जाता है।

श्रेणी 'अ'	7 सेमी व अधिक लम्बे टुकड़े, व्यास 1.5 से.मी. से अधिक बहुत आसानी से टूटने चाले (चाक की तरह) अंदर से पूरी तरह ठोस भंगुर व चमकदार सफेद रंग के।
श्रेणी 'ब'	7 सेमी. से कम व 5 सेमी तक लम्बे टुकड़े, व्यास 1 सेमी से कम व 0.8 सेमी. तक आसानी से टुटने वाले, अंदर से ठोस व सफेद रंग के।
श्रेणी 'स'	5 सेमी से कम व 3 सेमी तक लम्बे टुकड़े व्यास 0.8 सेमी से कम आसानी से नहीं टूटने वाले अंदर से कुछ खोखले व पीलापन लिये सफेद रंग के।
निम्न श्रेणी	3 सेमी से छोटे टुकड़े, तोड़ने में कठिनाई, अंदर से ज्यादा खोखले व पीला रंग लिये हुए।

9. **उपयुक्त किस्में –** जवाहर असगंध–20, जवाहर असगंध–134 जो कि राजमाता विजयाराजे सिंधियां कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत के.एन.के. उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, मन्दसौर से विकसित की गई है तथा आर.ए.वी.–100 इसकी उन्नतशील किस्में है, जिनकी उत्पादकता देशी किस्मों से अधिक पायी गयी है। ये किस्में रोग रोधी है। वर्तमान में अधिक उपज की किस्में विकसित करने के लिए भारत में महाराणा प्रताप कृषि एंव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, एंव आनन्द कृषि विश्वविद्यालय मे आनन्द में विभिन्न केन्द्रो पर अनुसंधान से प्राप्त परिणाम बहुत ही उत्साहवर्धक है। जिससे भविष्य में और भी उन्नत किस्मों का विकास किया जायेगा।
10. **पैकिंगः** वायुरोधी थैले इसके लिए उपयुक्त होते है। नमी के प्रवेश को रोकने के लिए अश्वंगधा को पालीथीन या नायलॉन बैग में पैकिग किया जाता है।
11. **भंडारण :** जड़े शुष्क स्थानों में भंडारित की जानी चाहिए। गोदाम, भंडारण के लिए उपयुक्त होते है। शीत भंडारण अच्छे नहीं होते है।

12. अश्वगंधा के अन्य–मूल्य परिवर्धन एवं उपयोग :

अश्वगंधा चूर्ण : अश्वगंधा एक्सट्रेक : अश्वगंधा की गोलियाँ

अश्वगंधा का दवा के रूप में सैकड़ों वर्षों से उपयोग किया जाता रहा है, अश्वगंधा में अनेक चमत्कारी गुण है, और आश्चर्यजनक रूप से लाभकारी है, अश्वगंधा का आयुर्वेद में बहुत ज्यादा उपयोग किया जाता है, इसका सही मात्रा में उपयोग करना कई मामलों में फायदेमंद है, लेकिन साथ ही एक सीमा तक ही इसका उपयोग करना चाहिए, तो आइए जानते है कि अश्वगंधा के प्रमुख फायदें कौन–कौन से है?

- अश्वगंधा के सेवन से गमच्वूमत बढ़ती है, वीर्य की गुणवत्ता बढ़ती है और वीर्य ज्यादा मात्रा में बनता है।
- जिन लोगों को हमेशा आलस्य महसूस होता रहता है, अश्वगंधा उनके लिए बहुत फायदेमंद होता है। इसके सेवन से आलस्य खत्म हो जाता है।
- जो लोग सम्भोग के दौरान जल्दी थक जाते है, यह उनके लिए भी एक बहुत प्रभावशाली औषधि है।
- अश्वगंधा वो दवा है, जो उम्र को नियंत्रित रखने में मदद करती है, जिससे व्यक्ति जल्दी बूढ़ा नहीं होता है, अर्थात् इसके सेवन करने से समय से पहले बुढ़ापा नहीं आता है।
- यह मन को शांत करता है और सहनशक्ति में वृद्धि करता है।
- यह हमारे शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता भी बढ़ाता है।
- यदि आपको अनिद्रा की शिकायत है, तो अश्वगंधा आपके लिए बहुत फायदेमंद साबित होगा।
- अश्वगंधा के सेवन से गठिया का दर्द खत्म हो जाता है।
- अश्वगंधा ब्लडप्रेशर को नियंत्रण में रखता है और इसे खाने से तनाव भी कम होता है।
- यह डायबीटीज में भी आपको काफी फायदा पहुँचाता है।
- अश्वगंधा पाचन तंत्र के लिए भी बहुत अच्छा होता है।
- अश्वगंधा शरीर में आयरन को बढाता देता है, हर दिन तीन बार 1–1 ग्राम सेवन करने से शरीर में खून की मात्रा बढ़ जाती है।
- इसे खाने से बालों का कालापन बढ़ जाता है।
- इससे महिलाओं की प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है।
- जिन स्त्रियों की योनी से सफेद चिपचिपा पदार्थ निकलता है, उन्हें भी अश्वगंधा खाने से बहुत फायदा पहुँचता है।
- टीबी में भी अश्वगंधा बहुत फायदा पहुँचाता है।
- अश्वगंधा याद्दाश्त में भी फायदा पहुँचाता है।
- अश्वगंधा के ज्यादा सेवन से ज्यादा नींद आती है।
- जिन लोगों को अल्सर की समस्या हो उन्हे खाली पेट में या केवल अश्वगंधा कभी नहीं खाना चाहिए।
- किसी बीमारी के समय भी अश्वगंधा का सेवन कर रहे हो, तो यह दूसरे दवाओं के असर को क्षीण कर सकता है।
- जिन लोगों को अश्वगंधा खाने से बुखार हो जाता है, उन्हें अश्वगंधा नहीं खाना चाहिए।

- गर्भवती स्त्रियों को अश्वगंधा का सेवन नहीं करना चाहिए।
- उन स्त्रियों को भी अश्वगंधा का सेवन नहीं करना चाहिए, जो अपने बच्चे को स्तनपान करा रही हो।

13. वर्तमान अनुसंधान स्थिति: अश्वगंधा फसल की उन्नत उत्पादन विधियों तथा उच्च उत्पादन किस्मों के विकास हेतु अनुसंधान कार्य अखिल भारतीय औषधीय एवं सुगंधित पौध परियोजना के अंर्तगत उदयपुर, आनन्द, मंदसौर व हिसार केन्द्र पर हो रहा है। नई किस्मों के विकास का कार्य प्रगति पर है तथा आने वाले 2–3 वर्षो मे उदयपुर केन्द्र द्वारा किसानों को ज्यादा उपज वाली किस्मों का विकास कर लाभ पहुचाया जा सकेगा।